21

# चालीस दिन

## (मत्ती 28; मरकुस 16; लूका 24; यूहन्ना 20, 21; प्रेरितों 1:1-12)

**1. पुनरुत्थान।** –भविष्यवक्ताओं द्वारा मसीहा के पुनरुत्थान की स्पष्ट भविष्यवाणी की थी (ज़ब. 16:10; यशा. 55:3; *तु.* प्रेरितों 2:25–31; 13:34–37), और स्वयं यीशु द्वारा भी बार-बार पहले से ही बताया था (मत्ती 16:21; 17:9; 20:19; 26:31, 32)। लेकिन चेलों के दिमाग में पहले से एक राजनैतिक राज्य की भावना यहां तक भरी हुई थी कि वे मसीहा की वास्तविक मृत्यु की बात सोच ही नहीं पाए या उनके ध्यान में भी नहीं आई। इसलिए उसकी मृत्यु से वे हक्के-बक्के रह गए अर्थात जैसे वे सुन्न हो गए हों। क्रूस पर यीशु का मरना पूरे मानवीय इतिहास में किसी उद्देश्य के इतने असहाय ढंग से खत्म होने का एकमात्र नमूना था। यदि यीशु जी न उठता तो उनकी आशाएं कभी पुनर्जीवित न होतीं। उसका जन्म, व्यक्तित्व और पुनरुत्थान तीन अनिवार्य और रचनात्मक आश्चर्यकर्म हैं। वे मसीहियत का आधार और इसकी पर्याप्त पूंजी हैं। दुखी चेलों को शोकित करने वाला सब्त बीत गया था। धुंधली सी भोर में दो मरियमें और अन्य श्रद्धालु स्त्रियां आईं, जो ''क्रूस के पास से जाने वाली अंतिम, और कब्र पर आने वालों में प्रथम थीं।'' उन्होंने यीशु के गाड़े जाने का स्थान तो देखा था परन्तु मुहर या कब्र पर पहरा देने वाले सुरक्षाकर्मियों का ज्ञान उन्हें नहीं था। वे क्रूसारोहण की रात समय कम होने के कारण लाश को तैयार करने की छूट गई रस्मों को पूरा करने के लिए मसालें लेकर आईं। परन्तु उन्होंने देखा कि कब्र खाली थी! पतरस और यूहन्ना अधिक दूर नहीं थे इसलिए शीघ्र ही वे भी कब्र पर आ गए। पहले तो सबके मन में यही आया कि प्रभु की देह को कोई चुराकर ले गया है; परन्तु स्वर्गदूतों के एक दर्शन से पुनरुत्थान की बात स्पष्ट हो गई।

**2. यीशु द्वारा दस दर्शन।** –(1) मरियम मगदलीनी को। चेले बहुत डरे हुए थे। परन्तु मरियम कब्र को देखने चली गई। सबसे पहले उसे ही यीशु ने दर्शन दिया और जाकर चेलों को बताने के लिए कहा। (2) थोड़ी देर बाद दूसरी स्त्रियों को। यीशु ने दूसरी स्त्रियों को चेलों को ढूंढ़ने के लिए जाते समय दर्शन देकर उन्हें भी अपने भाइयों के नाम संदेश दिया। (3) शमौन पतरस को: संयोग से लूका 24:33, 34 में और पौलुस द्वारा भी वर्णित (1 कुरिं. 15:5)। (4) इज़्माउस के मार्ग में दो चेलों को। उसी दिन क्लियुपास एक अन्य चेले के साथ इज़्माउस नामक पास के एक गांव में गया। उन्होंने खाली कब्र और स्वर्गदूतों के दर्शन की बात सुनी। जब वे वहां हुई बातों पर चर्चा करते हुए जा रहे थे तो यीशु भी

उनके साथ हो लिया, उसने उनकी उदासी के कारण स्वयं भविष्यवाणियों के सम्बन्ध में उन्हें समझाया और अंतत: रोटी तोड़कर अपने आप को उन पर प्रकट किया। यरूशलेम को लौटते हुए उन्होंने उस शाम प्रेरितों और दूसरे लोगों को शमौन के पास यीशु के दर्शन की बातें उत्सुकता से करते हुए पाया।[1] उनके साथ हुई घटना ने पहले से जली हुई आग पर घी डालने का काम किया होगा। उन्हें अभी तक विश्वास नहीं हो पाया था। (5) थोमा की अनुपस्थिति में प्रेरितों व अन्य चेलों की इस उत्सुकता के बीच ही यीशु ने उनके बीच अचानक आकर अपने आप को प्रकट किया, और इस अभिवादन के साथ उन्हें सलाम किया, ''तुम्हें शांति मिले,''[2] और उन्हें उनके अविश्वास के लिए डांटा। अपने पुनरुत्थान की वास्तविकता के लिए आश्वस्त करने के लिए उसने उन्हें अपने बेधे हुए हाथ और पांव दिखाए, उनके सामने खाया। ऊपर बताई गई सभी घटनाएं यीशु के जी उठने के दिन ही घटीं। (6) थोमा सहित सब प्रेरितों को। रविवार रात की मुलाकात के समय थोमा वहां नहीं था। एक सप्ताह बाद जब वे सब इकट्ठे थे तो यीशु ने दोबारा उन्हें दर्शन दिया। थोमा ने अपनी आंखों की गवाही को माना और पुनरुत्थान के तथ्य का अंतिम प्रेरित बना (पौलुस को छोड़कर)। (7) गलील सागर में सात चेलों को। चेले मछली पकड़ने के अपने पुराने काम में लग गए थे। रातभर के परिश्रम के बाद कोई मछली न पकड़ पाने पर उन्हें एक अजनबी द्वारा अपना जाल किनारे पर डालने के लिए कहा जाता है। यूहन्ना को परिणाम से एकदम पता चल गया कि यह तो प्रभु है; परन्तु किनारे पर जाकर उसे सलाम पहले पतरस ने किया। यहीं पर यीशु ने पतरस से उसके प्रेम की तिहरी प्रतिज्ञा ली, नि:संदेह यह उसके तीन बार इन्कार करने का बदला था। (8) पांच सौ चेलों को। यह सब सम्भवत: गलील में हुआ (तु. मत्ती 28:16, 19; 1 कुरिं. 15:6), यहां उसके चेले इकट्ठे रहते थे। इस मुलाकात का हमारे पास कोई निश्चित विवरण नहीं है। (9) याकूब को (1 कुरिं. 15:7)। (10) स्वर्गारोहण के समय जैतून के पहाड़ पर। लगता है कि पुनरुत्थान से लेकर यीशु अपने चेलों के साथ उससे कहीं अधिक बार रहा जितना कि नये नियम में लिखा गया है, और उसने खण्डित इतिहास में मिलने वाली बातों से कहीं अधिक निर्देश दिए। (देखिए प्रेरितों 1:3.)

**3. अंतिम आज्ञा।** –अपने पुनरुत्थान के बाद अंतिम मुलाकात में या कई मुलाकातों के दौरान, यीशु ने प्रेरितों को अंतिम आज्ञा दी। यूहन्ना का मिशन, यीशु का निजी मिशन, बारह का पहला मिशन और सत्तर का मिशन सब तैयारी के लिए ही थे। उन सबका संदेश ''राज्य निकट है'' ही था (*तु.* मत्ती 3:2; 4:17; 10:7; लूका 10:9)। यह संदेश केवल इस्राएल तक ही सीमित था (मत्ती 10:5; 15:24)। प्रेरितों को यह प्रचार करने की अनुमति नहीं थी कि यीशु ही मसीह है (मत्ती 16:20; 17:9)। मसीह पृथ्वी पर रहने, दुख उठाने और जी उठने के लिए आया ताकि प्रचार करने के लिए सुसमाचार *बन* सके। अब केवल एक को छोड़कर शेष सभी प्रतिबंध हटा लिए गए हैं। अब उनके लिए सम्पूर्ण और अंतिम सुसमाचार अर्थात ''मसीह और उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने'' (1 कुरिं. 15:1–4; 2:1); ''सारे जगत में''; ''सब जातियों के लोगों को''; मसीह में विश्वास, पाप से मन फिराव,

और ''पिता और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम में'' बपतिस्मे के द्वारा सिद्ध और अंतिम सुसमाचार का प्रचार करना आवश्यक है।[3] परन्तु वे पूरी तरह से योग्य नहीं थे इसलिए उनसे कहा गया कि ''जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो''[4]; ज़्योंकि ''थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।''[5] संक्षेप में, अंतिम आज्ञा ऐसी है जिसके अधीन, अठारह मसीही शताब्दियों से विश्वव्यापी सुसमाचार के प्रचार का काम हो रहा है।

**4. स्वर्गारोहण।** –''मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, ज़्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा'' (यूहन्ना 16:7)। इस प्रकार यीशु अपने चेलों को जैतून के पहाड़ पर ले गया और ''अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी। और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया।''[6] स्वर्गारोहण से मसीहा के मिशन की नई समझ मिली। उनके पुराने सांसारिक स्वप्न खत्म होने लगे। परमेश्वर ने मनुष्य को नीचे किया ताकि वह उसे परमेश्वर तक ऊंचा करे। और इस तरह वे ग्यारह प्रेरित आनन्द से यरूशलेम को लौट गए और सुसमाचार का इतिहास प्रतिज्ञा किए हुए आत्मा की प्रतीक्षा करते हुए चेलों के साथ समाप्त हो जाता है।

---

पाद टिप्पणियां

[1]पतरस। [2]लूका 24:36; यूहन्ना 20:19. [3]मत्ती 28:19. [4]लूका 24:49; प्रेरितों 1:4 भी देखिए। [5]प्रेरितों 1:5. [6]लूका 24:50, 51.